मासिक पत्रिका अक्टूबर 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

वैदिक-संस्कृति की आज के युग को चुनौती

जब अंग्रेज़ इस देश में राज करते थे तब हम लोगों में अपनी संस्कृति के लिए ज़्यादा तड़पन थी, तब अपनी संस्कृति के लिए काम भी ज़्यादा हुआ था। अब अंग्रेज़ों के चले जाने के बाद न हम में अपनी संस्कृति के लिए वह तड़पन है, न हम इसके लिए उतना काम ही कर रहे हैं। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में कुछ सांस्कृतिक संस्थाओं ने जन्म लिया। उत्तर-भारत में आर्य-समाज, दक्षिण में ब्रह्म-समाज, प्रार्थना- समाज आदि की नींव पड़ी। इस काल में ऋषि दयानन्द हुए, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन आदि हुए। उसके बाद के काल में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द घोष, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गाँधी आदि हुए। इन सबके कार्य का मुख्य बिन्दु भारत की संस्कृति का पुनर्जीवन था। आर्य समाज ने वेदों की तरफ़, वैदिक संस्कृति की तरफ़ देश का ध्यान खींचा, गुरुकुलों की स्थापना की, भारतीय संस्कृति की तरफ़ देश का ध्यान केन्द्रित कर दिया। इस समय देश में जगह-जगह संस्कृत पाठशालाओं की भी भरपूर स्थापना हुई, ऐसी पाठशालाओं की जिनका मुख्य ध्येय प्राचीन-संस्कृति, प्राचीन साहित्य, प्राचीन-परम्परा की साधना थी। अंग्रेज़ों के चले जाने और देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद हमारी भारतीय-संस्कृति की लगन को भी साथ लेते गये। कई लोगों का तो कहना है कि अंग्रेज़ गये परन्तु अंग्रेज़ियत को पीछे छोड़ गये।

जब अंग्रेज़ इस देश में शासन करते थे तब राजनीति का क्षेत्र एक बन्द क्षेत्र था। अधिकाँश व्यक्तियों ने अपने लिए इस क्षेत्र को बन्द ही पाया। इसका परिणाम यह था कि जिन लोगों में कुछ कर डालने की लालसा थी वे सांस्कृतिक क्षेत्र में कार्य करते रहे, और इस क्षेत्र में देश के उच्चकोटि के कार्यकर्त्ता आते रहे। उस समय यह कोई नहीं पूछता था संस्कृत पढ़ने का क्या लाभ है, उस समय यह कोई नहीं पूछता था कि भारतीय-संस्कृति क्या है और इस संस्कृति का क्या लाभ है। भारत की संस्कृति के प्राण-त्याग, तपस्या, नि:स्वार्थ भाव, सेवा आत्मोत्सर्ग-यही कुछ रहे हैं। इन भावनाओं का वेग जब प्रबल हो गया, स्वार्थ, भोग-विलास का वेग जब धीमा पड़ गया, तभी देश स्वतन्त्र हुआ।

जिन लोगों की तपस्या के कारण सांस्कृतिक-क्षेत्र को हम, अंग्रेज़ों के समय, हरा-भरा देखते थे, वे या उस प्रकार की शक्ति वाले लोग इस क्षेत्र को छोड़ते चले जा रहे हैं। इसलिए हमें स्वतन्त्रता के बाद के इस युग में संस्कृतिक जागरण नहीं दिखलाई देता।

तो क्या हमारी संस्कृति में ऐसी कुछ बातें नहीं हैं जो हमारे युवकों को अपनी तरफ़ खींचें? ऐसी बात होती तो अपने देश की संस्कृति अब तक जीवित ही क्यों रहती? संसार की संस्कृतियाँ मिट गईं परन्तु भारतीय संस्कृति आज तक जीवित है-यह क्यों? जब किन्हीं दो देशों की संस्कृतियों का टकराव होता है तब उनमें एक-दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया होती है। अगर किसी देश की संस्कृति प्राणवती है, बलवान् है, तो वह निर्बल संस्कृति को खा जाती है, अगर वह कमज़ोर है तो बलवती संस्कृति के सामने अपने को मिटा देती है, अगर दोनों संस्कृतियाँ तुल्य-बल की हैं, दोनों प्राणवान् हैं, दोनों के अपने-अपने मज़बूत आधार हैं, तो इन दोनों संस्कृतियों का पहले विरोध होता है, फिर समय बीत जाने पर उनका आदान-प्रदान होता है, वे एक-दूसरे का कुछ लेती है, कुछ अपना छोड़ती है।

अब तक जो विदेशी भारत में आये थे वे संस्कृति की दृष्टि से शून्य थे, मुसलमान संस्कृति की दृष्टि शून्य नहीं थे, उनकी अपनी एक संस्कृति थी और प्रबल संस्कृति थी। भारतीय संस्कृति को खतरा यह था कि अगर यह अपने को नहीं बदलती

तो तलवार भी चल सकती थी। इस्लाम के सामने दुनिया की अन्य संस्कृतियों ने सिर झुका दिया था, परन्तु भारत की संस्कृति की यह विशेषता दिखलाई देती है कि इस्लाम के साथ टक्कर में हमने अपना देश भले ही गँवा दिया, परन्तु हमारी संस्कृति ज्यों-की-त्यों अडिग खड़ी रही। अपने देश की संस्कृति की रक्षा के लिए उत्तर-भारत में सिक्खों के गुरु उठ खड़े हुए, दक्षिण-भारत में शिवाजी ने लोहा लेना शुरु किया। मुसलमानों का 800-900 वर्षों का काल निकल गया परन्तु इस देश की संस्कृति ने गर्दन नहीं झुकाई। इस सबका परिणाम यह हुआ कि यद्यपि इस्लाम में औरंगज़ेब जैसे असहिष्णु बादशाह हुए परन्तु उसके साथ ही अकबर जैसे बादशाह भी हुए, दारा जैसे व्यक्ति भी हुए जिन्होंने उपनिषदों का अनुवाद किया और इस देश की संस्कृति से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें मुसलमानों तक ने काफ़िर कहना शुरु कर दिया। मुसलमानों के बाद इस देश में अंग्रेज़ आये। अंग्रेज़ भी आक्रान्ता बनकर आये, परन्तु आक्रान्ता होने के साथ-साथ इनकी भी एक संस्कृति थी, वह संस्कृति जिसे पाश्चात्य- संस्कृति कहा जाता है, भौतिक संस्कृति।

अंग्रेज़ आये थे सौदागर बनकर, व्यापारी बनकर, रुपया कमाने, सौदागरी से वे हुकूमत करने लगे। अंग्रेज़ इस देश में अपनी संस्कृति का प्रचार करने नहीं आये थे, परन्तु उनके साथ उनकी संस्कृति का आना स्वाभाविक था। मुसलमानों की संस्कृति धर्म पर आधारित थी, धर्म की दृष्टि से भारतीय संस्कृति के साथ वह टकराती रही। अंग्रेजों की संस्कृति धर्म पर आधारित नहीं थी, यह सर्वथा भौतिक थी, सांसारिक थी। भारतीय संस्कृति का आधार धर्म था, पाश्चात्य -संस्कृति का आधार धर्म नहीं था; भारतीय-संस्कृति के अंजर-पंजर ढीले हो गये, वह पाश्चात्य संस्कृति के सामने टिक नहीं सकी। आज हम अपनी संस्कृति का नाम भर लेते हैं, परन्तु वह संस्कृति नष्ट हो चुकी है। न उसमें हमारा विश्वास रहा है, न हम उसे अपने जीवन में उतारने के लिए तैयार हैं। अपने को धोखा देने से क्या फ़ायदा। हम अंग्रेज़ों को निकालना चाहते थे, अंग्रेज़ी संस्कृति को नहीं निकालना चाहते थे। अंग्रेज़ी संस्कृति को हम क्यों चाहने लगे थे? इस संस्कृति को हम इसलिए चाहने लगे थे क्योंकि हमें यह संस्कृति अपनी संस्कृति से, भारतीय संस्कृति से ज़्यादा मोहक, ज़्यादा प्राणवती, ज़्यादा बलवती दिखलाई दे रही थी। जनता का विश्वास नेताओं के विश्वास के पीछे चलता है। क्या कारण है कि हम सत्य और अहिंसा की उपासना करते हैं, परन्तु जहाँ स्वार्थ सिद्ध होता दीखता हो वहाँ झूठ बोलने के लिए और अपने पड़ोसी का गला काटने के लिए तैयार रहते हैं? इस देश की संस्कृति की बातें हमारे आदर्श के लिए रह गई हैं, हमारे जीवन में पाश्चात्य-विचार ठोस रूप में उतरे हुए हैं?

समय था जब इस देश की संस्कृति एक जीवित संस्कृति थी, प्राणवान् संस्कृति थी, उस समय हमारी संस्कृति के सब विचार जीवित विचार थे, आज वे सब विचार जीवित विचार नहीं रहे, मरे हुए विचार हो गये हैं। आखिर, विचार ही तो किसी संस्कृति को बनाते हैं। **मनुष्य जो-कुछ है, विचारों का परिणाम है।**

आज की स्थिति यह है कि हमारी संस्कृति को प्राणवान्, तेजस्वी बनानेवाले विचार हमारे पास नहीं रहे। यह संस्कृति अगर जीवित हो सकती है तो उन विचारों से जीवित हो सकती है जिन्होंने इस संस्कृति को संसार की अन्य संस्कृतियों मे मूर्धन्य बनाया था। उदाहरणार्थ, वैदिक-संस्कृति को प्राणवान् बनाने वाले विचार हैं-अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या, निष्काम-भाव, अपरिग्रह, वानप्रस्थ, संन्यास, पारलौकिक सत्ता में विश्वास, आत्मवाद। ये विचार किसी समय जीवित-जागृत विचार थे, ऐसे जीवित-जागृत जिससे हमारी संस्कृति भी जीवित-जागृत कही जा सकती थी। आज भी ये विचार मौजूद हैं, परन्तु आज इन विचारों में आत्मा नहीं दीखती, इन विचारों का खोल दिखलाई देता है। ये विचार नित्य हैं, अखण्ड हैं, भौतिकवादी भी इन विचारों को छोड़ नहीं सकता, परन्तु अब ये कहने को रह गये हैं, करने को नहीं रहे।

ब्रह्मचारी का क्या अर्थ है? क्या ब्रह्मचारी का यह अर्थ है कि जो पीली धोती पहनता हो, खड़ावें धारण करता हो। 'ब्रह्मचर्य' तो एक विचार है, आर्य-संस्कृति का विचार है, पीली धोती, खड़ाँव, तो उसका स्थूल रूप है। आज हमारी मौलिक समस्या ब्रह्मचर्य की नहीं है, 'ब्रह्मचर्य' शब्द को प्राणवान् तथा जीवित बनाने की है।

इसी प्रकार निष्कामता, त्याग, तपस्या, सत्य, मुनि, वानप्रस्थी, संन्यासी-ये शब्द हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। क्या ये शब्द आज जीते-जागते शब्द हैं या ये शब्द भी खोखले हो चुके हैं। क्या इनमें सार और सत्ता है या नहीं रही। वानप्रस्थीपन तो एक मनोवृत्ति का नाम था, वह मनोवृत्ति जिसमें संसार के प्रति अनासक्ति की, त्याग की, तपस्या की भावना पैदा हो जाती थी। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारी संस्कृति कभी जीवित थी, जीवित थी का अर्थ है कि हमारी संस्कृति के विचार निरे थोथे, खोखले, निर्जीव और निष्प्राण विचार नहीं थे, आज वे निष्प्राण हो चुके हैं-इस बात को समझना हमारे लिए ज़रूरी है।

वैदिक-संस्कृति की यही तो आधारभूत भावना है कि हर किसी को दुनिया एक-न-एक दिन छोड़नी है। जीते-जी अपनी मृत्यु देख लेना-यही तो संन्यास है।

भारत की संस्कृति में त्याग-तपस्या-ये ऐसे शब्द हैं जिन्हें कौन भूल सकता है, यहाँ का सारा जीवन त्यागमय था, तपस्यामय था।

संस्कृति केवल शब्दों का नाम नहीं है, सार्थक शब्दों का नाम है; संस्कृति दार्शनिक विचारों का नाम नहीं है, संस्कृति क्रियात्मक विचारों का नाम है, संस्कृति विचारों की उस धारा को कहते हैं जो किसी देश या जाति के जीवन में उतरती जाती है।

कहाँ है वे लोग जो राज्य भी करते थे और ठीक समय पर राज को छोड़ भी देते थे, संसार के ऐश्वर्यों को भोगते भी थे और समय आने पर उन्हें त्याग भी देते थे। संस्कृति केवल विचारों का नाम नहीं है, संस्कृति किन्हीं विचारों को आचार में लाने का नाम है।

हमारी संस्कृति की असली समस्या उसे पुनर्जीवित करने की है। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य-वर्ण-व्यवस्था, सोलह संस्कार, अपरिग्रह, निष्कामता, त्याग, तपस्या, ईश्वर, जीवात्मा, परमात्मा, भोग-त्याग, इह-लोक, पर-लोक-आज ये सब शब्द खोखले हो चुके हैं, इन खोखले शब्दों को फिर से प्राणवान् बनाना, इनमें जीवन भरना-यह है हमारी असली समस्या।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश के नवयुवकों का ध्यान संस्कृति से हटकर राजनीति की तरफ़ चला गया है। संस्कृति का उद्देश्य देश में एकता लाना होता है, एकता से शान्ति आती है। राजनीति का आधार शक्ति प्राप्त करना है, संस्कृति का आधार शक्ति प्राप्त करना नहीं, अपितु जीवन बनाना है, जीवन की समस्याओं को समझना और उन्हें सुलझाना है। सांस्कृतिक -क्षेत्र में एकता है, शान्ति है। विचारों की उन धाराओं को जो आज सूखती जा रही है फिर से आप्लावित करना वैदिक-संस्कृति का पुनर्जीवित करना है।

वास्तविक प्रश्न परम्पराओं के साथ चिपटे रहने का नहीं, वास्तविक प्रश्न वैदिक-संस्कृति की आधारभूत, मौलिक विचारधारा को, मौलिक दृष्टिकोण को हाथ से न खो देने का, उस दृष्टिकोण को बनाए रखने का है। बदली हुई परिस्थितियों में जो अपने को नहीं बदल पाता वह टिक नहीं सकता, अपने को परिस्थितियों के अनुसार बदलना जीवन का चिन्ह है, परन्तु हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम बदलते हुए कहीं अपने को अपनी संस्कृति की विचारधारा से बिल्कुल तोड़ते तो नहीं चले जा रहे? अध्यात्मवाद की विचारधारा को भौतिकवादी युग में क्या रूप देना होगा-यह हमारी असली समस्या है। ■■

वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व -

इस वर्ष **20 से 25 अगस्त 2018** तक वेद कथा का कार्यक्रम आयोजित किया गया **20 से 22 अगस्त 2018** तक प्रातः काल के यज्ञ में डॉ. रघुवीर वेदालंकार ब्रह्मा थे तथा सायंकाल के समय श्री जगत वर्मा के भजनों के पश्चात् डॉ. साहब के निम्न विषयों पर प्रवचन थे।

20.08.2018 स्तुता मया वरदा वेदमाता।
21.08.2018 जीव स्वरूप आग्नेय हवि।
22.08.2018 परमेश्वर, संसार एवं हवि।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने गुरुकुल झज्जर से व्याकरणाचार्य की उपाधि प्राप्त की, गुरुकुल कांगड़ी से 'वेदालंकार' हैं और M.A., P.hd., D.Litt दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त है। हमारे लिये बड़े गर्व का विषय है कि डॉ. रघुवीर को राष्ट्रपति ने संस्कृत भाषा के राष्ट्रीय विद्वान घोषित कर सम्मानित किया है।

23 से 24 अगस्त 2018 प्रातः काल के यज्ञ में डॉ. विनय विद्यालंकार ब्रह्मा के पद पर आसीन थे तथा सायंकाल के समय, भजनों के पश्चात्, डॉ. विनय विद्यालंकार के निम्न विषयों प्रवचन थे-

23.08.2018 पुरुषार्थ चतुष्टय-एक विवेचन।
24.08.2018 आचारः परमो धर्म-व्यावहारिक दृष्टि।

डॉ. विनय विद्यालंकार ने आर्ष गुरुकुल एटा से शिक्षा प्राप्त कर गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की डिग्री प्राप्त की। आर्योपदेशक के अतिरिक्त आप राजकीय कालेज नैनीताल के एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर आसीन हैं। समय-समय पर इस आर्य समाज को सदा आध्यात्मिक विषयों पर सलाह देने के लिये उद्यत रहते हैं और हमारे समाज में आपके कई कार्यक्रम होते रहते हैं।

25 अगस्त 2018 का मुख्य कार्यक्रम था। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. विनय विद्यालंकार थे। यज्ञ की पूर्णाहुति तथा यज्ञ शेष प्रसाद-वितरण के पश्चात्, श्री राजेन्द्र वर्मा, मंत्री ने मुख्य अतिथि-श्रीमती शिखा राय तथा विशिष्ट अतिथिगण श्रीमती संतोष मुंजाल माताजी तथा उनके परिवार के सदस्यों का तथा डॉ. सुखदेव पॉल और श्री विवेक पॉल का (श्रीमती अमृत पॉल के पति-देव तथा सुपुत्र) का स्वागत व अभिनन्दन किया। श्रीजगत् वर्मा के मधुर भजनों के बाद डॉ. महेश विद्यालंकार का प्रवचन था। उन्होंने अन्य विषयों के अतिरिक्त इस आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को निर्माणाधीन वैदिक केन्द्र पर शुभकामनायें दीं तथा आर्य शिशु शाला के नामकरण पर श्रीमती अमृत पॉल तथा

परिवार की भी विशेष प्रशंसा की। श्रीमती शिखा राय, जो दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की स्थाई समिति की अध्यक्षा हैं, समाज के कार्यकर्ताओं की आध्यात्मिक कार्यों पर सराहना की। इसके पश्चात् '**अमृत पॉल आर्य शिशु शाला**' का विधिवत् वेद मंत्रों के साथ श्रीमती संतोष मुंजाल, श्रीमती शिखा राय तथा श्री विवेक पॉल व श्री सुखदेव पाल तथा अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में नामकरण किया गया।

इसके पश्चात् यज्ञशाला में डॉ. विनय विद्यालंकार का 'आर्य समाज एक संस्था या आन्दोलन' विषय पर एक सारगर्भित ज्ञान वर्धक प्रवचन था। कार्यक्रम की समाप्ति से पहले श्री विजय लखनपाल प्रधान ने सब अतिथियों तथा विद्वानों और सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद किया और प्रीतिभोज में सम्मिलित होने का आमंत्रण दिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। ■■

अक्टूबर 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
07	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	आयुर्वेद का सिद्धान्त क्या है?
14	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	मुण्डकोपनिषद का सार।
21	श्री लक्ष्मीकान्त (9897666491)	भजन।
28	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	25 से 28 अक्टूबर, 2018

सितम्बर मास में प्राप्त दान राशिः—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
लाला दीवान चन्द ट्रस्ट	31,000/-	श्रीमती विमला भाटिया	5,000/-	श्री वेद प्रकाश चावला	1,100/-
पं. राधे श्याम-कंठवचक चेरिटेबल ट्रस्ट	25,000/-	श्री सनत कुमार बहल	5,000/-	सुश्री आदर्श भसीन	1,100/-
		श्री प्रबोध चन्द्र गुप्ता	3,000/-	श्रीमती राधा नागपाल	1,100/-
रोटरी क्लब दिल्ली साउथ	15,000/-	श्री आत्म प्रकाश रेलन	2,100/-	मक्कर परिवार	1,100/-
श्रीमती कमेलश अरोड़ा	15,000/-	श्री आर.के. सुमानी	2,000/-	श्री सुनील बिसला	1,100/-
श्रीमती पुष्पा मलिक	11,000/-	श्रीमती मंजू सचदेवा	2,000/-	श्री ललित महाजन	1,100/-
M/s बहल बिल्डर	11,000/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	2,000/-	श्रीमती विजय मेहता	1,000/-
श्रीमती वीना कश्यप	11,000/-	श्रीमती कृष्णा चौधरी	2,000/-	श्रीमती सत्या चौधरी	1,000/-
श्रीमती सुदेश चोपड़ा	10,000/-	श्री गौरव सुमानी	2,000/-	श्री प्रेम सहगल	1,000/-
M/s ज्वैलर्स एम राजसन्स	9,000/-	श्री विक्रान्त	2,000/-	कैप्टन जे.बी. आनन्द	501/-
श्रीमती वीना कश्यप	6,000/-	श्री विमल एवं एच.एल. कौल	1,500/-	श्री अदित्य बहल	500/-
श्री अनूप कुमार बहल	5,200/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	1,400/-	डॉ. आंचल बहल	500/-
M/s रसलीन बावा	5,000/-	श्री हरदीप आनन्द	1,200/-	गुप्त दान	500/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि : ❖ M/s हीरो फाइनकॉर्प लि. ₹ 25,00,000/-
❖ श्री राजीव चौधरी ₹ 1,00,000/- ❖ श्रीमती सतीश सहाय ₹ 5,000/-

अन्य दानः ❖ श्री मोहित 1 Carpet - 8'x10', 2 Insulin Injection, 2 Stool Pot Chair, 1 Supporting Bed
❖ श्रीमती विद्या छाबड़ा 1 Wheel Chair ❖ श्री राजीव चौधरी 2 Asan for Yajnashala ❖ श्रीमती सरोज सतपाल 2 ROM Knee Brace

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली

दिनांक : 25-26-27-28 अक्टूबर 2018

स्थानः स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी, नई दिल्ली

अपीलः अपना दान नगद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा महासम्मेलन की सफलता हेतु "आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1" के नाम आर्य समाज के कार्यालय बी-31/सी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अधिक से अधिक राशि भेजने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। **आर्य समाज को दी जाने वाली** राशि आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।